Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अक्तोबर /2024 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Oct/2024

Date of Publication:20-10-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

1.10.2024 को आयोजित सालाना इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह क़ादियान के अवसर पर श्री सय्यद कलीमुद्दीन अहमद साहिब ज़ाईमे आला अनामात तक़सीम फ़रमाते हुए ।

1.10.2024 को सालाना इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह क़ादियान में आयोजित दिलचस्प मुक़ाबिला स्लो साइकिल रेस का एक दृश्य ।

21.7.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला महबूबनगर (तेलंगाना) के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य का एक दृश्य ।

6.10.2024 को कोइम्बटूर (तमिल नाडु) में आयोजित रक्त दान का एक दृश्य।

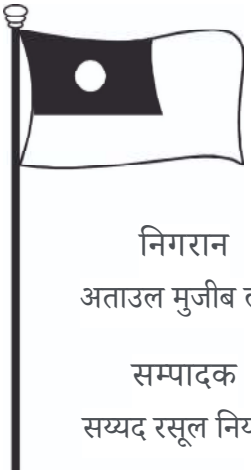

بسم الله الرحمن الرحيم نحمده ونصلي على رسوله الكريم وعلى عبده المسيح الموعود

يا أيها الذين آمنوا كونوا أنصار الله

سورة الصف آيت ١٥

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज

उप-सम्पादक(हिन्दी)

डॉ.अब्दुल माजिद

9915279005

मनैजेर

ताहिर अहमद बेग

99152 23313

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान

वार्षिक मूल्य :250 ₹
विदेश: 50अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता
मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume–22 ऑक्टोबर 2024 Issue -10

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल कुरान	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय: सालाना इज्तिमाआत का हकीकी मक़सद – दीन	4
निवेदन सदर मज्लिस: नमाज़ ही इबादत का मगज़ है	5
कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि: डॉक्टर हाफिज़ सवालेह मुहम्मद अलाह्दीन साहिब(मरहूम)	7

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed @ Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published @ Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

कुरान करीम

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ۔

(سورۃ المجادلہ:12)

अनुवाद: हे लोगों जो ईमान लाए हो! जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में (दूसरों के लिए) जगह खुली कर दो, तो खुली कर दो। अल्लाह तुम्हें उन्नति देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाओ। अल्लाह उनके दरजे ऊंचे करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और खास तौर पर उनके जिन्हें ज्ञान दिया गया है। और अल्लाह तुम जो कुछ करते हो, उससे हमेशा अवगत रहता है।

हदीस नबवी ﷺ

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا اَيُّهَا النَّاسُ ارْتَعُوْا فِىْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ۔قُلْنَايَارَسُوْلَ اللّٰهِ مَارِيَاضُ الْجَنَّةِ ؟ قَالَ مَجَالِسُ الذِّكْرِقَالَ اغْدُوْا وَرُوْحُوْا وَاذْكُرُوْا مَنْ كَانَ يُحِبُّ اَنْ يَّعْلَمَ مَنْزِلَتَهٗ عِنْدَاللّٰهِ تَعَالٰى فَلْيَنْظُرْكَيْفَ مَنْزِلَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عِنْدَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُنْزِلُ الْعَبْدَ مِنْهُ حَيْثُ اَنْزَلَهٗ مِنْ نَفْسِهٖ۔

(قشیریہ باب الذکر صفحہ۱۱۱)

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ बताते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास आए और फरमाया: "ऐ लोगों! जन्नत के बाग़ों में चरने की कोशिश करो।" हमने कहा: "या रसूल अल्लाह! जन्नत के बाग़ से क्या मुराद है?" आपने फरमाया: "ज़िक्र की मजालिस जन्नत के बाग़ हैं।" आपने यह भी फरमाया कि सुबह और शाम के वक़्त ख़ास तौर पर अल्लाह का ज़िक्र करो। जो शख्स यह चाहता है कि उसे उस दर्ज़े और इज़्ज़त का इल्म हो जो अल्लाह के पास उसकी है, तो वह देखे कि अल्लाह के बारे में उसका क्या ख्याल है। क्योंकि अल्लाह अपने बंदे की उसी तरह कदर करता है जैसे उसके दिल में अल्लाह के लिए है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

इस जलसा का मकसद और असल उद्देश्य यह था कि हमारी जमात के लोगों के दिल पूरी तरह से आखिरत की ओर झुक जाएँ।

"इस जलसा का उद्देश्य यह है कि हमारी जमात के लोग अपने दिलों में आखिरत की मोहब्बत को भरपूर तरीके से बसा लें। हम चाहते हैं कि वे बार-बार की मुलाकातों के जरिए एक ऐसी तबदीली हासिल करें जिससे उनके दिल अल्लाह के खौफ से भर जाएं, और वे ज़ुहद, तकवा, और ख़ुदा तरसी आपसी मोहब्बत और भाईचारे में दूसरों के लिए एक मिसाल बनें, इनक़सार, तवाज़ु और रास्तबाज़ी की सिफात उनमें पैदा हों, और वे दीनी सरगर्मियों में भागीदारी करें। दिल तो यही चाहता है कि मुबाइयीन केवल अल्लाह के लिए सफर करके आएँ और मेरी संगति में रहें और कुछ बदलाव लेकर जाएँ, क्योंकि मौत का कोई भरोसा नहीं। मेरे विचार में मबाइयीन को फायदा होता है, लेकिन मुझे असल में वही नजर आता है जो धैर्य के साथ धर्म की तलाश करता है और केवल धर्म को चाहता है। तो ऐसे पाक नीयत लोगों का आना हमेशा बेहतर है...यह जलसा ऐसा नहीं है कि दुनिया के मेलों की तरह इसका कोई अनिवार्यताएँ होनी चाहिए। बल्कि इसका आयोजन नीयत की शुद्धता और अच्छे नतीजों पर निर्भर करता है। वरना बिना इसके यह निरर्थक है और जब तक यह मालूम न हो कि इस जलसे से धार्मिक लाभ होता है और लोगों के चाल-चलन और नैतिकता पर इसका क्या प्रभाव है, तब तक ऐसा जलसा केवल फिजूल है। और इस ज्ञान के बाद भी इस सामूहिकता से अच्छे नतीजे उत्पन्न नहीं होते। एक पाप और भटकाव का तरीका और बुरी परंपरा है। मैं हरगिज नहीं चाहता कि हाल के कुछ पीरजादों की तरह केवल बाहरी शान दिखाने के लिए अपने मबाइयीन को इकट्ठा करूँ...मैं सच्ची बात कहता हूँ कि इंसान का ईमान हरगिज सही नहीं हो सकता जब तक वह अपने आराम से पहले अपने भाई के आराम को न रखे।

... कोई सच्चा मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका दिल नरम न हो, जब तक वह अपने आप को हर किसी से नीचतर न समझे और सारी श्रेष्टता के ख़यालात दूर न हो जाएँ। खादिम-उल-कौम होना, मखदूम बनने की निशानी है और गरीबों से नर्म होकर और झुककर बात करना, मकबूल-ए-इलाही होने की निशानी है। और बुराई का जवाब भलाई से देना, सौभाग्य का प्रतीक है, और गुस्से को निगल जाना और कड़वी बात को सहन करना सबसे बड़ी वीरता है।"

(शहादतुल कुरान,रूहानी खज़ाइन, खंड 06, पृष्ठ 394 से 395)

सम्पादकीय

सालाना इज्तिमाआत का हकीकी मक़सद – दीन

कौम में जागृति पैदा करने के लिए अलग-अलग वक्त पर लोगों को इकट्ठा करना ज़रूरी होता है। इसकी बेहतरीन मिसाल जमात के साथ नमाज़ है। अहमदियों पर अल्लाह ताला का ख़ास फ़ज़ल है कि जमात के हर तबके को साल में कई बार ऐसे मौके मिलते रहते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह ताला बिनस्रहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

" रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, 'तुम उन लोगों के साथ बैठो जिनको देखकर तुम्हें अल्लाह याद आए, जिनकी बातें तुम्हारे ईमान को बढ़ाएं और जिनके काम तुम्हें आख़िरत की याद दिलाएं।' इसलिए ऐसी अच्छी जगहें हैं जो हमें सुकून देती हैं। इनमें आम घरों में होने वाली मजलिस, इज्तमा और जलसे भी शामिल हो सकते हैं। जमाअत अहमदिया बहुत भाग्यशाली है कि यहां पर इस तरह के मौके बहुत मिलते हैं।"

इसी मक़सद को पेश नज़र रखते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद رضی اللہ عنہ मजलिस अन्सारुल्लाह में सालानह इज्तिमाआत का आगाज़ करते हुए फ़रमाते हैं :

" अगर जानवरों और परिंदों के रंग आस पास की चीज़ों की वजह से बदल जाते हैं तो इंसान के रंग जिन में दिमागी काबिलियत भी होती है पास के लोगों को क्यों नहीं बदल सकते... अतः जमाअत की तन्ज़ीम और जमाअत के अंदर दीनी रूह के कियाम और इस रूह को ज़िंदा रखने के लिए यह ज़रूरी है कि हर शख़्स अपने पड़ोसी की इस्लाह की कोशिश करे क्यूंकि पड़ोसी की इस्लाह में उसकी अपनी इस्लाह है। हर शख़्स जो अपने आप को इस से आज़ाद समझता है वह अपनी रूहानी तरक्की के रास्ते में ख़ुद रोक बनता है। बड़े से बड़ा इंसान भी और अधिक रूहानी तरक्की का मुहताज होता है।'' (अल-फ़ज़ल 6 अगस्त 1945 ई. पृष्ठ. 1 ,2)

सैय्यदना हज़रत खलीफ़ातुल मसीह राबे رحمہ اللہ सालाना इज्तिमाआत का मक़सद बयान करते हुए फ़रमाते हैं:"इज्तिमात का मक़सद ख़ालिसतन दीनी है और अगरचे खेलों वग़ैरह का इन्तज़ाम भी किया जाता है, आम इल्मी मुक़ाबले भी होते हैं, लेकिन आख़िरी मक़सद व उद्देश्य दीन ही है।"

(अहमदीय बुलेटीन हालैंड शुमारह नंबर 2 जुलाई 1987 ई.)

शारीरिक स्पर्धाओं के अलावा इज्तिमाअत का एक अहम हिस्सा इल्मी मुक़ाबले हैं। इसकी हिकमत बयान करते हुए हज़रत खलीफ़ातुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं:"इल्मी मुक़ाबले ... इसीलिए किए जाते हैं कि आप के ज़हनों में इल्म की जोत जगाई जाए। क़ुरआन करीम में से मुख़्तलिफ़ मुक़ाबले करवाऐ (जाते हैं ताकि) आप इस ... रूहानी गिज़ा पर ग़ौर करें और इसके इल्म को हासिल करने की कोशिश करें।" (मशअल राह जिल्द पंचम हिस्सा चहारम सफ़हा 52)

विविध बौधिक, शारीरिक स्पर्धाओं सहित नमाज़े तहाज्जुद, पंचों नमाजें,विषेश दरस और तर्बीयती सेशन वग़ैरह का आयोजन होता है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें मुक़ामी, ज़िल्लाई और मर्कज़ी सालाना सहित हर एक इज्तिमा से भरपूर फ़ायदा उठाने कि तौफ़ीक अता फ़रमाए। आमीन।

हाफ़िज़ सैय्यद रसूल नियाज़

निवेदन सदर मज्लिस

नमाज़ ही इबादत का मगज़ है।

क़ुरआन करीम से मालूम होता है कि जिन्न और इंस की पैदाइश का मक़सद ही ख़ुदा ताआला की इबादत है। इबादत कुछ ज़ाहिरी हरक़ात का नाम नहीं है बल्कि उन तमाम ज़ाहिरी और बातिनी क़ोशिशों का नाम है जो इंसानों को अल्लाह ताआला की सिफ़ात का मज़हर बना देती हैं। क्योंकि 'अब्द' के मानी असल में किसी नक़्श के क़बूल करने और पूरे तौर पर उसकी मुनाशी के मातहत चलने के होते हैं। नमाज़ ही इबादत का मगज़ है। नमाज़ में भी सजदे की हालत में बंदा ख़ुदा के सब से क़रीब होता है। इस लिए किसी भी हालत में पांच वक़्ते नमाज़ की अदाएगी में सुस्ती मुनासिब नहीं। अल्लाह तआला सहाबा رضی اللہ عنہ के बारे में फ़रमाता है:

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ (النور:38)

यानी ऐसे अज़ीम मर्द जिन्हें न कोई तिजारत और न कोई ख़रीद-फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से या नमाज़ के कियाम से या ज़कात की अदाएगी से ग़ाफ़िल करती है।

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत मुस्लेह मौऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं:"वो तिजारतें तो करते हैं, मगर उनके दिल ख़ुदा ताआला के ज़िक्र में मशग़ूल होते हैं और उनके कान ख़ुदा ताआला की आवाज़ सुनने के मुंतज़िर होते हैं। जैसे ही उनके कानों में मुअज़्ज़िन की आवाज़ आती है, वो अपनी तिजारत को छोड़कर, अपनी खेती को छोड़कर और अपनी सनअत और हिरफ़त को छोड़कर दौड़ते हुए मस्जिद में हाज़िर हो जाते हैं। इसी तरह जब रात आती है, तो यह नहीं होता कि वो इस ख़याल से कि दिन को हमने मशक़्क़त का काम करना है, सोए ही रहें और अल्लाह तआला की इबादत के लिए न उठें। बल्कि जब तहज्जुद का वक़्त आता है, तो वो फौरन बिस्तर से अलग हो जाते हैं और अल्लाह ताआला के ज़िक्र और उसकी इबादत के लिए खड़े हो जाते हैं।" (तफ़सीर-ए-कबीर जिल्द 8 पृष्ठ 529, एडिशन 2023 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद علیہ السلام अपने आने का मकसद यूँ बयान फ़रमाते हैं:"वो काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर फ़रमाया है,वो यह है कि ख़ुदा में और उसकी मख़लूक के रिश्ता में जो दूरी आ गई है, उसको ठीक करके मोहब्बत और इख़्लास के तअल्लुक़ को दोबारा क़ायम करूँ।" (लेक्चर लाहौर - रूहानी ख़ज़ाने जिल्द 20 सफ़हा 180)

मुबारक वो जो अब ईमान लाया,
सहाबा से मिला जब मुझको पाया।

आंहज़रत ﷺ के सहाबा इस क़दर ज़ौक़ से नमाज़ अदा करते थे कि एक सहाबी (हज़रत अली رضی اللہ عنہ) के बदन से नमाज़ की हालत में तीर निकाला गया। हज़रत सैय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब رضی اللہ عنہ की साहिबज़ादी हलीमा बेगम अंतिम सांसें ले रही थीं कि अज़ान हो गई, तो आप رضی اللہ عنہ ने बच्ची का माथा चूमा और सर पर हाथ फ़ेर कर उसे सुपुर्द-ए-ख़ुदा कर के मस्जिद चले गए। नमाज़ के बाद जल्दी से उठकर वापिस आने लगे तो किसी ने जल्दी की वजह तलाश की तो फ़रमाया कि बच्ची को अंतिम क्षणों की हालत में छोड़ आये थे, अब फ़ौत हो चुकी होगी। इसके कफ़न-दफ़न का इन्तज़ाम करना है। कुछ दूसरे दोस्त भी घर तक साथ आये और बच्ची वफ़ात पा चुकी थी।"

(असहाब-ए-अहमद जिल्द 5 हिस्सा 3 स. 82, बहवाला सीरत सैय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब स. 24)

हज़रत खलीफ़ातुल मसीह अल-ख़ामिस अईदहुल्लाह ताआला बिनस्रह अल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"मुसलमान बनना बहुत मुश्किल काम है। और जो उसवा आंहज़रत ﷺ ने क़ायम फ़रमाया, उस पर चलना बहुत मुश्किल है, इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इसके मुताबिक़ अपने आप को ढाल लिया तो समझ लें कि हमने अपनी बैअत के हक़ को भी पूरा किया और अन्सारुल्लाह होने का हक़ भी अदा कर दिया। अतः जब हमने अपने आप को अन्सारुल्लाह कहा है और 'नहनु अन्सारुल्लाह' का नारा लगाया है, तो फिर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहि सलातो वस्सलाम की जमाअत में होने और अन्सारुल्लाह होने का हक़ अदा करने के लिए अपनी भरपूर कोशिश करनी चाहिए।" (ख़ुलासा इख़्तितामी ख़िताब सालानह इज्तिमाअ मजलिस अन्सारुल्लाह यू.के.2024(

दुआ है कि अल्लाह ताआला हमें इस की तौफ़ीक अता फ़रमाए। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

अध्यक्ष, मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

क्या आज आप ने इन दुओं का विरद कर लिया हे

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّد (२००बार)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ (१०० बार)

رَبِّ کُلُّ شَیْءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحْفَظْنِیْ وَانْصُرْنِیْ وَارْحَمْنِیْ (१०० बार)

कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि

(तक़रीर, डॉक्टर हाफिज़ सवालेह मुहम्मद अलाह्दीन साहिब,जलसा सालाना क़ादियान.1992)

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है:

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ (سورۃسبا:7) "और जो लोग ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, वे उस ज्ञान को जो तुझ पर तेरे रब की ओर से नाज़िल किया गया है, सत्य समझते हैं और यह भी जानते हैं कि वह ज्ञान अज़ीज़ और हमीद(महान और प्रशंसनीय) अल्लाह की ओर ले जाता है।" (सूरा सबा:7)

इस आयत में यह महान भविष्यवाणी है कि ज्ञान रखने वाले लोग देखेंगे कि कुरआन की बातें बिल्कुल सच्ची हैं। कुरआन की महानता का यह एक पहलू है कि 1400 साल पुरानी किताब होने के बावजूद इसमें ऐसी सच्चाइयाँ मौजूद हैं जिनकी आधुनिक विज्ञान की खोजें पुष्टि करती हैं। मेरा इस भाषण का उद्देश्य उन सच्चाइयों का वर्णन करना है।

कुरआन का मूल उद्देश्य अल्लाह की ओर ले जाना है, यह कोई विज्ञान की पाठ्यपुस्तक नहीं है। लेकिन अल्लाह की ओर मार्गदर्शन करते हुए, कुरआन में विज्ञान की विभिन्न आश्चर्यजनक सच्चाइयों का उल्लेख किया गया है जिनका अध्ययन ईमान को बढ़ाने का कारण बनता है। जमाअत अहमदिया के संस्थापक, हज़रत मसीह मौऊद عليه السلام और उनके खुलफाए किराम हमें समझाते रहे हैं कि कुरआन और विज्ञान दो विरोधी चीजें नहीं हैं, बल्कि इनका आपस में बहुत गहरा संबंध है। क्योंकि कुरआन अल्लाह का कलाम है और विज्ञान अल्लाह के कार्य का अध्ययन है। अगर हमें दोनों में कोई विरोधाभास दिखाई दे तो इसका मतलब यह है कि या तो हम कुरआन को समझने में कोई गलती कर रहे हैं या विज्ञान को समझने में कोई गलती कर रहे हैं।

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

हज़रत मसीह मौऊद ﷺ फरमाते हैं: "कुरआन शरीफ अल्लाह तआला के उस कानून कुदरत की तस्वीर है जो हमेशा हमारे नज़र के सामने है। यह बात निहायत मक़बूल है कि ख़दा का क़ौल और फेअल दोनों मुताबिक़ होने चाहीएँ। यानी जिस रंग और तर्ज़ पर दुनिया में ख़ुदा तआला का फेअल नज़र आता है ज़रूर था कि ख़दा ताला की सच्ची किताब अपने फेअल के मुताबिक़ तालीम करे ना यह कि फेअल से कुछ और ज़ाहिर हो और क़ौल से कुछ और ज़ाहिर हो।"

अपने इस विषय की अहमियत के संबंध में, मैं हमारे वर्तमान इमाम, हज़रत मिर्जा ताहिर अहमद साहब, खलीफातुल मसीह राबे अय्यदुहूल्लाह तआला का एक महत्वपूर्ण कथन प्रस्तुत करता हूँ जिसमें हुज़ूर अकदस ने धार्मिक और सांसारिक ज्ञान में संतुलन बनाने की ओर ध्यान दिलाया था।

कुरआन के अवतरण के समय दुनिया गहन अज्ञानता के दौर से गुजर रही थी। उस समय अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे आका, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ पर यह वाही नाज़िल की: "पढ़ अपने रब के नाम से जिसने सब चीज़ों को पैदा किया। जिसने इंसान को एक खून के लोथड़े से पैदा किया। फिर हम कहते हैं कि पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने कलम से सिखाया।" और आगे भी सिखाएगा। उसने इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह पहले नहीं जानता था।"

यह पहली वही थी जो हमारे प्यारे आका पर नाज़िल हुई थी। इस तरह कुरआन के अवतरण के साथ ही अल्लाह तआला ने यह घोषणा कर दी कि कुरआन के माध्यम से ऐसे ज्ञान दुनिया को दिए जाएंगे जो अभी किसी को मालूम नहीं हैं, साथ ही यह भी कि अब एक वैज्ञानिक युग आएगा जिसमें कलम के माध्यम से ज्ञान का प्रसार होगा।

"जब कुरान नाज़िल हुआ था, अरब के लोग बिलकुल जाहिल थे। कुरान की बरकत से उन्होंने धार्मिक और दुनियावी ज्ञान सीखा। फिर उनके ज़रिए से स्पेन ने सीखा और और भी तरक्की की।

हज़रत मसीह मौऊद ﷺ फरमाते हैं: 'इसमें कोई शक नहीं कि ज्ञान में हमेशा तरक्की होती रहती है और एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी कोशिश करती है कि उसका ज्ञान का स्तर पहले से ऊंचा हो जाए, लेकिन इसके बावजूद बीज अपनी स्थिति में जो कीमत रखता है, उससे कोई इंकार नहीं कर सकता। पेड़ का फैलाव कितना ही बढ़ जाए, बीज की अहमियत से इंकार नहीं किया जा सकता। इसी तरह ज्ञान चाहे कितना ही तरक्की कर जाए, इसका श्रेय

मुसलमानों को ही रहेगा और मुसलमानों का सिर कुरान के आगे झुका रहेगा क्योंकि यही वह किताब है जिसने एलान किया कि 'अल्लमा बिलक़लम' यानी अब दुनिया को कलम के ज़रिए ज्ञान सिखाने का वक्त आ गया है। इसलिए सच्चाई यही है कि दुनिया को सारे ज्ञान कुरान ने ही सिखाए हैं। अगर कुरान ना आया होता तो दुनिया एक अंधेरे में होती, अज्ञानता और बर्बरता का नज़ारा पेश करती। यह कुरान का एहसान है कि इसने दुनिया को अंधेरे से निकाला और ज्ञान के मैदान में लाकर खड़ा कर दिया।'"

"हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Glimpses of World History' में अरब वैज्ञानिकों को 'आधुनिक विज्ञान का जनक' कहा है। अरब वैज्ञानिकों ने विज्ञान को किस हद तक विकसित किया, यह एक अलग विषय है जो अभी मेरी बात का विषय नहीं है, हालांकि इसका उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है।

पृथ्वी घूम रही है:

जब कुरान हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हो रहा था, उस समय ब्रह्मांड के बारे में प्रचलित धारणा यह थी कि पृथ्वी स्थिर है और ब्रह्मांड का केंद्र है। इस धारणा को समझने के लिए तारों का उदय और अस्त होना देखा जाता था। यह माना जाता था कि सभी तारे एक विशाल गोले में जड़े हुए हैं जो 24 घंटों में अपने अक्ष पर एक चक्कर लगाता है। साथ ही यह भी माना जाता था कि पृथ्वी और तारों के बीच जो अंतरिक्ष है उसमें सात ग्रह घूमते हैं: सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि। सप्ताह के दिनों के नाम इन्हीं ग्रहों पर रखे गए हैं। जैसे कि Sunday का संबंध सूर्य से है।

यह सिद्धांत कुरान के अवतरण से सदियों पहले से चला आ रहा था और कुरान के अवतरण के बाद भी सदियों तक कायम रहा। पृथ्वी का स्थिर होना एक अटल सत्य माना जाता था। कुरान ने दुनिया को यह क्रांतिकारी वैज्ञानिक बात बताई कि पृथ्वी चल रही है। अरबी में पृथ्वी के लिए 'अर्ज़' शब्द का प्रयोग हुआ है और 'अर्ज़' का मूल अर्थ 'दौड़ना' या 'चक्कर लगाना' हैं। इसलिए 'अर्ज़' शब्द ही यह

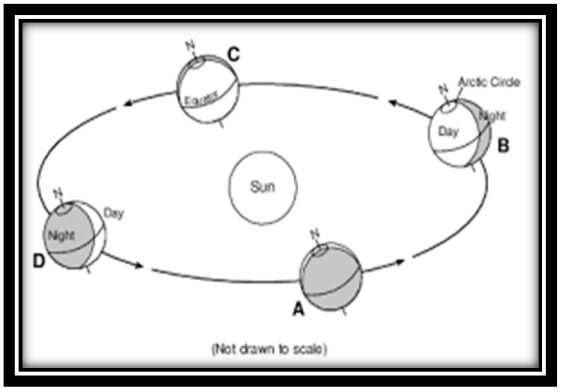

दर्शाता है कि पृथ्वी गतिशील है।

कुरान में सूरत अल-मलक में पृथ्वी की गति का स्पष्ट उल्लेख है। इसमें कहा गया है: "वह (अल्लाह) वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी को तुम्हारे आधीन कर दिया है, तो तुम उसके ऊपर चलो और उसके रिज़क़ से खाओ और उसी की ओर लौट कर जाना है।"(सूरत अल-मलक, आयत 16) इस आयत में 'ذلول' शब्द आया है, जिसका अर्थ है 'नरमी और सफाई से चलने वाला'। आयत का अर्थ यह है कि हे लोगों, वह अल्लाह ही है जिसने पृथ्वी को बहुत ही नरमी और सफाई से चलने वाली बनाई है। क्या तुम्हें इसकी गति का एहसास नहीं होता? तो तुम निश्चित रूप से इसके चारों ओर चलो और उसके रिज़क़ से खाओ और उसी की ओर लौट कर जाना है।

साथ ही कुरान में कहा गया है:

وَتَرَي الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ

(النمل 89)

यानी तुम पहाड़ों को स्थिर समझते हो, जबकि वे बादलों की तरह चल रहे हैं। यह अल्लाह की कृतियाँ है जिसने हर चीज़ को मज़बूत बनाया है, वह तुम्हारे कामों से खूब वाकिफ है।

हज़रत खलीफतुल मसीह सनी ؓ ने अपनी तफ़सीर-ए-सग़ीर में फ़रमाया है कि इस आयत में पृथ्वी के चलने का ज़िक्र है। पुराने भूगोलवेत्ताओं के विपरीत जो पृथ्वी को स्थिर बताते थे। साथ ही सूरत यासीन के तीसरे रुकू में पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा का ज़िक्र है। इसके बाद ये शब्द आते हैं:

وَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُون "और सब एक निश्चित कक्षा में तैर रहे हैं।" यानी ये सब एक निश्चित रास्ते पर बहुत ही आसानी से चलते चले जाते हैं। कुरान के अवतरण के सदियों बाद 1543 में कॉपरनिकस ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र नहीं है, बल्कि सूर्य को केंद्रीय स्थिति प्राप्त है और बृहस्पति, शुक्र आदि ग्रह पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूम रहे हैं, बल्कि सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं।

दुनिया के इतिहास में जो सबसे बड़े वैज्ञानिक क्रांतियां हुई हैं, उनमें यह क्रांतिकारी सिद्धांत मूलभूत महत्व का है। आनहजरत ﷺ के ज़माने के सदियों बाद सोलहवीं सदी ईस्वी में भी यह सिद्धांत स्वीकार करना कि पृथ्वी स्थिर नहीं है, लोगों के लिए मुश्किल था और इसे दुनिया में लोकप्रियता प्राप्त होने में बहुत समय लगा।

(भाग २ नवम्बर कि पत्रिका में)

9.9.2024 को श्री प्रताप सदंगी एम, पि, बालासोर (ओडिशा) को जमाअती लिटरेचर पेश करते हुए श्री नसीर आलम साहिब अमीर ज़िला बालासोर, श्री शैख़ अब्दुल क़ादिर साहिब अमीर ज़िला भद्रक एवं श्री हलीम अहमद मुबल्लिग़ इंचार्ज।

30.6.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह उस्मानाबाद (महा राष्ट्र) के इख़्तितामि इजलास में सदारति ख़िताब फ़रमाते हुए श्री वसीम अहमद अज़ीम नुमाइंदा सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत ।

27.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला भरतपुर (राजस्थान)के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य।

27.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला भरतपुर (राजस्थान) के स्टेज का एक दृश्य।

13.9.2024 को आयोजित रिफ्रेशर क्लास के अवसर पर सदारति ख़िताब फ़रमाते हुए श्री एम नासिर अहमद साहिब नाईब सदर सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत ।

15.9.2024 को आयोजित सालाना इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला भागलपुर (बिहार) के अवसर पर तक़सीमे इनामात का एक दृश्य।